७. स्वराज्य का प्रशासन

शिवाजी महाराज ने स्वराज्य की स्थापना की। स्वयं का राज्याभिषेक करवाया । राज्याभिषेक के पश्चात उन्होंने दक्षिण का विजयी अभियान चलाया। स्वराज्य का विस्तार हुआ । इस स्वराज्य में नाशिक, पुणे, सातारा, सांगली, कोल्हापुर, सिंधुदुर्ग, रत्नागिरि, रायगढ़ और ठाणे जिलों के बहुत से प्रदेशों का अंतर्भाव था । साथ ही; कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु राज्यों के कुछ हिस्से स्वराज्य में समाविष्ट थे । इस तरह विस्तारित स्वराज्य का प्रशासन सुचारु रूप से चले, स्वराज्य में लोगों का कल्याण हो; इस उद्‌देश्य को पूर्ण करने के लिए शिवाजी महाराज ने स्वराज्य को सुस्थिति प्रदान की । इस विषय की जानकारी हम प्राप्त करेंगे ।

अष्टप्रधान मंडल : शिवाजी महाराज ने राज्याभिषेक के अवसर पर अष्टप्रधान मंडल का गठन किया । राज्य प्रशासन की सुविधा की दृष्टि से उसे आठ विभागों में बाँटा गया । प्रत्येक विभाग हेतु एक प्रमुख की नियुक्ति की गई । आठ विभागों के आठ प्रमुख मिलकर 'अष्टप्रधान मंडल' बना । इन प्रमुखों की नियुक्ति करना अथवा उन्हें उनके पद से हटाना शिवाजी महाराज के अधिकार में था। ये विभाग प्रमुख अपने-अपने विभाग को लेकर शिवाजी महाराज के प्रति उत्तरदायी थे ।

शिवाजी महाराज ने गुणवत्ता और कार्य देखकर अष्टप्रधान मंडल का चुनाव किया । उन्हें वतन, पुरस्कार अथवा जागीरें नहीं दीं लेकिन नकद वेतन भरपूर दिया ।

कृषि विषयक नीति : गाँव-देहात का मुख्य व्यवसाय कृषि था । शिवाजी महाराज कृषि के महत्त्व को जानते थे । अतः उन्होंने किसानों के हितों को वरीयता दी । उन्होंने अपने पराक्रमी और अनुभवी अधिकारी अण्णाजी दत्तो को भू-राजस्व के प्रबंधन का दायित्व सौंपा । उन्होंने अधिकारियों को चेतावनी दे रखी थी कि वे निर्धारित राशि से अधिक राजस्व इकट्‌ठा न करें। बंजर भूमि को उपज योग्य बनाने के लिए प्रोत्साहन दिया । अतिवृष्टि या अकाल पड़ने पर फसल नष्ट होती है अथवा शत्रुसेना गाँव को ध्वस्त करती है तो ऐसी स्थिति में गाँववालों को भू-राजस्व (लगान) और अन्य करों में छूट दी जाती थी । साथ ही; शिवाजी महाराज ने अधिकारियों को आदेश दे रखा था कि ऐसे समय किसानों को बैलों की जोड़ी, हल और बोआई के लिए अच्छे बीज दिए जाएँ ।

शिवाजी महाराज का अष्टप्रधान मंडल

	प्रधान का कार्य	पद	कार्य
१.	मोरो त्रिंबक पिंगळे	प्रधान	राज्य का शासन चलाना तथा विजित प्रदेश की व्यवस्था चलाना ।
२.	रामचंद्र नीलकंठ मुजुमदार	अमात्य	राज्य का आय-व्यय देखना ।
३.	अण्णाजी दत्तो	सचिव	सरकारी आदेशपत्र भेजना ।
४.	दत्ताजी त्रिंबक वाकनीस	मंत्री	पत्रव्यवहार करना ।
५.	हंबीरराव मोहिते	सेनापति	सेना का प्रबंध देखना और राज्य की रक्षा करना ।
६.	रामचंद्र त्रिंबक डबीर	सुमंत	अन्य राज्यों से संबंध रखना ।
७.	निराजी रावजी	न्यायाधीश	न्याय करना ।
८.	मोरेश्वर पंडितराव	पंडितराव	धार्मिक कार्य/विधि देखना ।

तत्कालीन देहातों की अर्थनीति : कृषि व्यवसाय देहात की अर्थनीति की रीढ़ था । देहातों में कृषि व्यवसाय के पूरक व्यवसाय चलते हैं । गाँव के श्रमिक (कारीगर) वस्तुओं का उत्पादन करते थे । वे स्थानीय लोगों की आवश्यकताएँ पूर्ण करते थे । इस अर्थ में देहात आत्मनिर्भर थे । किसान अपनी उपज में से कारीगरों को उनकी आवश्यकतानुसार हिस्सा दिया करते थे । इस हिस्से को 'पौनी (पावना)' कहते थे ।

व्यापार और उद्‌योग : शिवाजी महाराज जानते थे कि जब तक व्यापार में वृद्‌धि नहीं होती; तब तक राज्य समृद्‌ध नहीं बनता । व्यापारियों के कारण राज्य में नव-नवीन और आवश्यक वस्तुएँ आती हैं । वस्तुएँ विपुल मात्रा में उपलब्ध होती हैं । व्यापार में वृद्‌धि होती है । संपत्ति बढ़ती है । शिवाजी महाराज के आदेशपत्र में एक वर्णन पाया जाता है- 'साहूकार (व्यापारी) राज्य और राजश्री की शोभा है।' यह वर्णन शिवाजी महाराज के व्यापारियों की ओर देखने के दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है । 'साहूकार' शब्द का अर्थ व्यापारी है ।

शिवाजी महाराज की नीति स्वराज्य के उद्‌योगों को संरक्षण देने की थी । इसका उत्तम उदाहरण नमक उद्‌योग है । उन्होंने कोकण में चलने वाले नमक के उद्‌योग को संरक्षण दिया। उस समय स्वराज्य में पुर्तगालियों के आधिपत्यवाले प्रदेश से नमक का आयात बड़ी मात्रा में होता था । इसका कोकण में चलने वाली स्थानीय नमक की बिक्री पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता था। इसे ध्यान में रखकर शिवाजी महाराज ने पुर्तगालियों के प्रदेश से आनेवाले नमक पर बहुत बड़ी चुंगी (कर) लगाई थी । उद्‌देश्य यह था कि पुर्तगालियों से आनेवाला नमक महँगा होकर उसका आयात कम हो जाए और स्थानीय नमक की बिक्री बढ़े ।

सेना व्यवस्था : शिवाजी महाराज की सेना में दो विभाग थे । एक थलसेना और दूसरी अश्वसेना। थलसेना में हवलदार, जुमलेदार जैसे अधिकारी थे। थलसेना प्रमुख को 'सरनोबत' कहते थे । सरनोबत थलसेना का सर्वोच्च अधिकारी था ।

अश्वसेना में दो प्रकार के घुड़सवार थे । एक शिलेदार और दूसरा बारगीर । शिलेदार के पास स्वयं का घोड़ा और शस्त्र होते थे । बारगीर को सरकार की ओर से घोड़ा और शस्त्र दिए जाते। अश्वसेना में बारगीरों की संख्या अधिक थी । अश्वसेना में अधिकारियों की श्रेणियाँ थलसेना की भाँति ही थीं। अश्वसेना का सर्वोच्च अधिकारी 'सरनोबत' था । नेताजी पालकर, प्रतापराव गुजर, हंबीरराव मोहिते जैसे शिवाजी महाराज की अश्वसेना के कुछ ख्यातिप्राप्त सरनोबत थे ।

समझें

भारतीय रक्षा विभाग के सेना दलों की जानकारी प्राप्त करो ।

- तीनों सेना विभागों के नाम बताओ ।
- प्रत्येक सेना विभाग के प्रमुख को क्या कहते हैं?
- तीनों सेना विभागों का प्रमुख कौन होता है ?

गुप्तचर विभाग : शत्रुओं से स्वराज्य की रक्षा करना आवश्यक था । इसके लिए शत्रुओं की गतिविधियों की अचूक जानकारी समय पर प्राप्त करनी पड़ती थी । यह जानकारी प्राप्त करना और उसे शिवाजी महाराज को सौंपने का कार्य उनके गुप्तचर विभाग के प्रमुख का था । उनका गुप्तचर विभाग बहुत कार्यक्षम था । बहिर्जी नाईक उनके गुप्तचर विभाग का प्रमुख था । वह अलग-अलग स्थानों की जानकारी प्राप्त कर लाने में पारंगत था। सूरत अभियान के पूर्व वह वहाँ की छोटी-सी-छोटी बात की जानकारी ले आया था ।

किले : मध्यकाल में किलों का असाधारण महत्त्व था । यदि किला अपने नियंत्रण में हो तो आसपास के प्रदेश पर ध्यान रखा जा सकता है तथा नियंत्रण भी रखा जा सकता है । विदेशी आक्रमण होने पर किले के सहारे प्रजा की रक्षा भी की जा सकती है। किले में अनाज, युद्‌ध के लिए आवश्यक

सामग्री, गोला-बारूद का संग्रह किया जा सकता है। स्वराज्य स्थापना के कार्य में निहित किलों का महत्व आदेशपत्र में इस प्रकार बताया गया है, 'यह राज्य तो पूजनीय ज्येष्ठ स्वर्गवासी स्वामीजी ने गढ़ द्वारा ही निर्माण किया है ।'

स्वराज्य में ३०० किले थे । शिवाजी महाराज ने इन किलों के निर्माण और मरम्मत पर बहुत बड़ा व्यय किया । राजगढ़, प्रतापगढ़, पावनगढ़ जैसे पहाड़ी किलों का निर्माण करवाया । प्रत्येक किले पर किलेदार, सबनीस और कारखानीस ये अधिकारी होते थे । किले पर अनाज के गोदाम और युद्ध सामग्री का प्रबंधन कार्य देखने के लिए एक अधिकारी होता था; जिसे कारखानीस कहते थे।

क्या तुम जानते हो ?

शिवाजी महाराज के दुर्ग निर्माण संबंध में छत्रपति संभाजी महाराज द्वारा उनके ग्रंथ 'बुधभूषण' में लिखित वर्णन उल्लेखनीय है । वह इस प्रकार है :

'कर्नाटक प्रदेश से लेकर बागलाण प्रदेश तक शत्रुओं के लिए अभेद्य दुर्ग, जैसे कई दुर्ग छत्रपति शिवाजी महाराज ने सह्याद्रि पर्वत के ऊँचे पठारों की श्रेणियों में स्थान-स्थान पर बनवाए । इसका उद्देश्य इस पृथ्वी की रक्षा करना था । उनके सफल नेतृत्व के कारण कृष्णा नदी के तट से लेकर समुद्र के चारों दिशाओं के आसपास इन किलों का निर्माण करवाया । छत्रपति शिवाजी महाराज रायरी किले में विजयी और समस्त राजाओं में अग्रसर रहे ।'

जलदुर्ग (समुद्री किले): शिवाजी महाराज समुद्री किलों के महत्व से भली-भाँति परिचित थे । उनके द्वारा निर्माण करवाए गए जलदुर्गों में मालवण का सिंधुदुर्ग उत्कृष्ट समुद्री किला है । इस किले के निर्माण में मजबूती लाने के लिए उन्होंने किले की नींव में सौ मन सीसा उँड़ेलवाने का प्रबंध किया था। सिद्दी पर दबाव बनाए रखने के लिए उन्होंने राजापुरी के सामने पद्मदुर्ग नामक समुद्री किले का निर्माण करवाया । इस किले के विषय में वे अपने एक पत्र में लिखते हैं, 'पद्मदुर्ग बँधवाकर एक राजपुरी के उर पर दूसरी राजपुरी बनाई ।'

पद्मदुर्ग

नौसेना : भारत के पश्चिमी तट पर गोआ के पुर्तगाली, जंजीरा के सिद्दी, सूरत और राजापुर के गोदामवाले अंग्रेज स्वराज्य के शत्रु थे और वे स्वराज्य के विस्तार कार्य में बाधा उत्पन्न करते थे। इन बाधाओं पर अंकुश रखना और पश्चिमी तट का संरक्षण करना आवश्यक था । इसके लिए शिवाजी महाराज ने नौसेना का निर्माण करवाया । वे जानते थे, 'जिसके पास नौसेना, समुद्र उसी का।' शिवाजी महाराज दूरदर्शी थे ।

शिवाजी महाराज की नौसेना में विविध प्रकार के चार सौ जलपोत थे । उनमें गुराब, गलबत और पाल युद्धपोत थे । इन जलपोतों का निर्माण कल्याण-भिवंडी की खाड़ी, विजयदुर्ग और मालवण में करवाया जाता था । मायनाक भंडारी और दौलत खान नौसेना के प्रमुख अधिकारी थे ।

गुराब

गलबत

करके देखो

भारतीय नौसेना में कार्यरत युद्धपोतों की जानकारी प्राप्त करो और उन जलपोतों के चित्रों का संग्रह करो ।

प्रजा के हितों के प्रति जागरूक : अन्य दूसरे शासकों अथवा राजाओं की भाँति शत्रु के आधिपत्य वाले प्रदेश को जीतना और वहाँ अपना प्रभुत्व जमाना; इतनी सीमित आकांक्षा को लेकर शिवाजी महाराज ने कार्य नहीं किया । प्रजा को स्वतंत्र बनाना उनका उद्‌देश्य था। यदि प्रजा स्वतंत्रता का सही अर्थ में आनंद प्राप्त करना चाहती है तो शासन का प्रशासन अनुशासनबद्ध होना चाहिए, प्रजा के हितों के प्रति सर्वांगीण रूप से सजग रहना चाहिए और विजित प्रदेशों की रक्षा करनी चाहिए; यह बोध उन्हें था । शिवाजी महाराज केवल सत्ताधीश नहीं थे अपितु प्रजाहितों के प्रति एक सजग शासक थे और यह बात उनके राज्य प्रशासन से स्पष्ट होती है ।

स्वाध्याय

१. पहचानो तो :

(१) आठ विभागों का मंडल –

(२) बहिर्जी नाईक इस खाते का प्रमुख था –

(३) शिवाजी महाराज द्‌वारा निर्मित मालवण के समीप का जलदुर्ग –

(४) किले में युद्ध सामग्री का प्रबंधन रखने वाला –

२. अपने शब्दों में लिखो :

(१) शिवाजी महाराज की कृषि विषयक नीति ।

(२) शिवाजी महाराज : प्रजाहितों के प्रति एक सजग शासक

३. क्यों; यह बताओ :

(१) शिवाजी महाराज ने अष्टप्रधान मंडल का गठन किया ।

(२) शिवाजी महाराज ने नौसेना का निर्माण करवाया ।

४. प्रवाही तालिका पूर्ण करो :

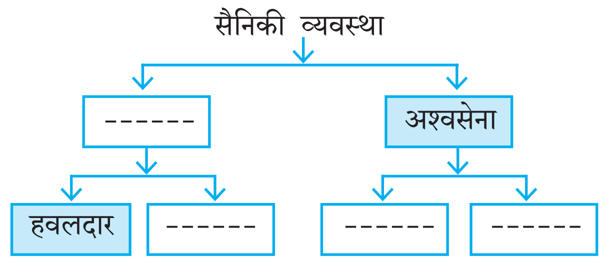

उपक्रम

(१) तुम्हारे परिसर में रहने वाले उस व्यक्ति से साक्षात्कार करो; जो भारतीय सेना में कार्य कर चुका है।

(२) अपने गाँव के बाजार में जाओ और परिसर में तैयार होनेवाली वस्तुओं और बाहरी स्थानों से विक्रय हेतु आई हुई वस्तुओं की सूची बनाओ ।

सिंधुदुर्ग

८. आदर्श शासक

स्वराज्य की स्थापना होने से पूर्व महाराष्ट्र पर आदिलशाही, सिद्दी, पुर्तगाली और मुगल सत्ताओं का प्रभाव था । शिवाजी महाराज ने इन सत्ताओं के विरुद्ध संघर्ष किया । सभी प्रतिकूल परिस्थितियों का उन्होंने सामना किया और स्वतंत्र तथा प्रभुता संपन्न स्वराज्य की स्थापना की । उन्होंने स्वराज्य के प्रशासन को व्यवस्थित रूप दिया और स्वराज्य को सुराज्य में परिवर्तित किया । शिवाजी महाराज ने अपनी वीरता और कार्य से नई व्यवस्था का ही निर्माण किया । स्वराज्य की स्थापना करने के कार्य में संघर्ष करते हुए उन्होंने स्वयं कई बार खतरे उठाए। अफजल खान से मिलने जाने की घटना हो अथवा पन्हाला गढ़ का घेरा, शाइस्ता खान पर किया गया धावा हो अथवा आगरा से छूटकर आना; ये सभी घटनाएँ खतरों से परिपूर्ण थीं । शिवाजी महाराज ने इन सभी घटनाओं पर सफलतापूर्वक विजय पाई और इनमें से वे सकुशल निकल आए ।

विचार करो

शिवाजी महाराज पर प्राण निछावर करनेवाले साथी-सहयोगी थे । इसीलिए वे स्वराज्य का निर्माण कर सके ।

विभिन्न भाषाओं में मित्रता का महत्त्व बताने वाले अनेक मुहावरे और कहावतें पाई जाती हैं । उन्हें ढूँढ़ो । जैसे- A Friend in need is a friend indeed.

संगठन कौशल : शिवाजी महाराज ने स्वराज्य अभियान के लिए अपने आसपास के लोगों को प्रेरित किया । उनके पास विलक्षण संगठन कौशल था । इसी कौशल के बल पर उन्होंने वीर और प्राण निछावर करने वाले लोगों को इकट्ठा किया । स्वराज्य के अभियान में उनके इन्हीं सहयोगियों ने अपने प्राणों की परवाह न करते अपने कर्तव्यों का निर्वाह किया । अफजल खान के साथ हुई भेंट की घटना में अति विकट क्षण में बड़ा सईद को मौत के घाट उतारने वाला जिवा महाला, पन्हाला गढ़ का घेरा तोड़कर जाते समय शिवाजी महाराज की भूमिका निभाने वाला शिवा काशिद, विशालगढ़ की ओर बढ़ते जा रहे शिवाजी महाराज का पीछा करने वाले शत्रु का रास्ता रोकने वाला बाजीप्रभु देशपांडे, पुरंदर किले के लिए युद्ध करने वाला मुरारबाजी देशपांडे, सिंहगढ़ को जीतने के लिए वीरगति पाने वाला तानाजी मालुसरे, आगरा से छूटकर निकल आने की घटना में बहुत बड़ा खतरा उठाने वाला हीरोजी फरजंद और मदारी मेहतर आदि अनेक लोगों के उदाहरण स्वराज्य निर्माण के अभियान में पाए जाते हैं । शिवाजी महाराज अपने सहयोगियों का बहुत ध्यान रखते थे । जैसे- स्वराज्य स्थापना के कार्य में कान्होजी जेधे उनके साथ आरंभिक समय से थे । वृद्धावस्था में वे बीमार हुए । उस समय शिवाजी महाराज ने उनसे कहा, 'उपचार करवाने में किसी भी प्रकार की लापरवाही न करें ।'

प्रजा के प्रति जागरूकता : स्वराज्य स्थापना के कार्य में शिवाजी महाराज का शत्रुओं के साथ संघर्ष चल रहा था । शत्रुओं के आक्रमणों से प्रजा त्रस्त हो जाती थी। उस समय वे अपनी प्रजा का अधिकाधिक ध्यान रखने का प्रयास करते । शाइस्ता खान पर धावा बोलते समय उन्होंने रोहिड़ घाटी के देशमुख को प्रजा के प्रति अपने कर्तव्य पूर्ण करने हेतु चेतावनी दी थी । उन्होंने देशमुख से कहा कि वह गाँव-गाँव घूमकर लोगों को घाट के नीचे सुरक्षित स्थान पर जाने के लिए कहें । उन्होंने कड़े शब्दों में कहा कि 'इस कार्य में एक क्षण की भी देरी नहीं होनी चाहिए ।' आगे वे यह भी चेतावनी देते हैं, ''यदि प्रजा का ध्यान रखा नहीं गया तो मुगल सेना आएगी, लोगों को बंदी बनाएगी और वह पाप तुम्हारे सिर पर होगा ।'' शिवाजी महाराज इस बात का भी ध्यान रखते थे कि उनके सैनिकों से प्रजा को कोई कष्ट न पहुँचे ।

सेना विषयक नीति : शिवाजी महाराज की सेना में कठोर अनुशासन था । वे इस बात का ध्यान रखते थे कि सैनिकों को निश्चित समय पर वेतन मिले । उन्होंने सैनिकों को नकद वेतन देने का प्रबंध किया । मध्यकालीन भारत में अनेक राज्यशासनों और अन्य क्षेत्रों में सैनिकों को नकद वेतन के बदले जागीर देने की पद्धति थी । शिवाजी महाराज ने इस पद्धति को रद्द कर दिया । जब शत्रु प्रदेश में उनके अभियान चलाए जाते तो सेना को चेतावनी दी जाती कि इस अभियान में उन्हें जो कुछ मिलेगा; वह सरकारी कोष में जमा करें । अभियान में वीरता और पराक्रम दिखाने वाले सैनिकों को सम्मानित किया जाता । युद्ध में जो सैनिक वीरगति प्राप्त करते; उनके परिवार के भरण-पोषण का वे ध्यान रखते । युद्ध में शरण आए हुए शत्रु सैनिकों अथवा बंदी सैनिकों के साथ सद्व्यवहार करते ।

क्या तुम जानते हो ?

फसल की बोआई, सिंचाई और फसल के पकने की अवधि में यदि युद्ध शुरू हो जाता है तो किसान की दुरावस्था का वारा-पारा नहीं रह जाता । बोआई के काम में सैनिकों की गतिविधियाँ आड़े आ ही जातीं । सैनिक कई बार खड़ी फसल भी काट ले जाते अथवा नष्ट कर देते । किसानों के मकान लूटते । शिवाजी महाराज ने अपने अधिकारियों को आदेश दे रखा था कि वे अपने सैनिकों को ऐसी हरकतों से दूर रखें। इस संदर्भ में ई.स.१६७४ में छत्रपति शिवाजी महाराज का अपने सेना अधिकारियों को उद्देश्य कर लिखा पत्र बहुत महत्त्व रखता है । शिवाजी महाराज ने सेना के अनुशासन के विषय में कितनी सूक्ष्मता से विचार किया था; इसकी कल्पना इन वाक्यों से हो जाती है ।

''यदि प्रजा को कष्ट पहुँचाने लगोगे तो इस स्थिति में लोग कहाँ जाएँगे ? कोई किसान का अनाज हठात ले आएगा तो कोई रोटी छीन ले जाएगा । कोई घास-फूस तो कोई साग-सब्जी ले जाएगा । ऐसा होने लगा तो जो किसान अपने प्राणों के भय से किसी तरह रहते हैं, वे भी घर छोड़कर जाने लगेंगे । अनगिनत लोगों पर भूखों मरने की नौबत आएगी । यह तो वही होगा कि लूटने आए थे मुगल और उससे अधिक तुमने ही उन्हें लूटा । ऐसा शाप मिलेगा ।''

सहिष्णु आचरण : शिवाजी महाराज को आदिलशाह, मुगल और सिद्दी जैसे शत्रुओं से संघर्ष करना पड़ा । ये इस्लामी सत्ताएँ थीं । उनके साथ युद्ध करते समय शिवाजी महाराज ने स्वराज्य में रहने वाले मुस्लिमों को अपना प्रजाजन माना । अफजल खान से भेंट करते समय उनके सैनिकों में सिद्दी इब्राहीम नाम का विश्वसनीय सेवक था । सिद्दी हिलाल शिवाजी महाराज की सेना का सरदार था और दौलत खान स्वराज्य की नौसेना का महत्त्वपूर्ण अधिकारी था ।

शिवाजी महाराज की धार्मिक नीति सहिष्णु थी। शत्रु के किसी प्रदेश को जीतने पर; उस प्रदेश में मुस्लिम धार्मिक स्थानों को मिलने वाली सुविधाएँ; वे वैसी ही जारी रखते । उनके सहिष्णुतापूर्ण धार्मिक नीति के संबंध में इतिहासकार खाफी खान लिखता है, 'शिवाजी महाराज ने अपने सैनिकों के लिए कड़ा नियम बनाया था कि अभियान में किसी भी मस्जिद को क्षति नहीं पहुँचाएँगे । कुरआन की प्रति हाथ लगने पर उसे श्रद्धा भाव से किसी मुस्लिम व्यक्ति को सौंप देंगे ।'

स्वतंत्रता की प्रेरणा : शिवाजी महाराज ने स्वराज्य स्थापना के लिए जो प्रयास किए; उन प्रयासों का अपना अलग मूल्य है और वह मूल्य स्वतंत्रता का मूल्य है । इस मूल्य का उद्देश्य किसी अन्य सत्ता के प्रभुत्व को स्वीकार न करते हुए अपना स्वतंत्र और प्रभुता संपन्न अस्तित्व बनाए रखना है । विदेशी और अन्यायी सत्ताओं से संघर्ष करते हुए शिवाजी महाराज ने दूसरों को भी स्वतंत्रता की प्रेरणा दी । मुगलों की सेवा में रत छत्रसाल जब शिवाजी महाराज से मिला तब उन्होंने उसे बुंदेलखंड में स्वतंत्र राज्य निर्माण करने की प्रेरणा दी ।

शिवाजी महाराज के कार्यों की महानता : शिवाजी महाराज ने अनेक शत्रुओं के साथ संघर्ष

करते हुए स्वराज्य की स्थापना की । उनका यह कार्य उनके युगप्रवर्तकत्व को सिद्‌ध करता है। इस कार्य के अतिरिक्त उनके व्यक्तित्व में अन्य दूसरे अनेक सद्‌गुणों का कोश भी पाया जाता है ।

शिवाजी महाराज अत्यंत बुद्‌धिमान थे । उन्होंने अनेक विद्‌याएँ आत्मसात की थीं । उन्हें कई भाषाएँ और लिपियाँ अवगत थीं । माता-पिता द्‌वारा किए गए स्वराज्य स्थापना और नैतिकता के संस्कार उनके मन की गहराई में जड़ जमाए हुए थे । उनके व्यक्तित्व में चारित्र्य और बल, शील और वीरता का सुंदर समन्वय हुआ था । उनमें नेतृत्व, प्रबंधन, दूरदर्शिता, राजनीतिक कूटता, नागरिक और सैनिकी प्रशासन से संबंधित नीति, सत्य और न्याय के प्रति निष्ठा, सभी के साथ समान व्यवहार करने की प्रवृत्ति, आगामी बातों का ढाँचा बनाने का नियोजन, नियोजित बातों को पूर्ण करने का कौशल, संकट में अडिग रहते हुए ऊपर उठने का निश्चय, सदैव जागरूक रहने की सजगता आदि असंख्य गुण थे ।

स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार करनेवाले को वे कठोर दंड देते । प्रजा के किसान, कारीगर, सैनिक, व्यापारी जैसे सभी वर्गों का वे ध्यान रखते । अपने धर्म के लोगों की भाँति वे अन्य धर्मों के लोगों के प्रति भेदभाव न करते हुए उनका आदर करते थे । दूसरे धर्म में चले गए लोगों को पुन: अपने धर्म में स्वीकार करने का जिस समय में कड़ा विरोध किया जाता था; उस समय उन्होंने धर्मांतरित लोगों को अपने धर्म में लिया । समय पड़ने पर उनसे स्वयं का रिश्ता जोड़ा । धार्मिक कारणों से समुद्री यात्रा को विरोध किया जाता था; ऐसे समय उन्होंने सिंधुदुर्ग जैसे जलदुर्ग का निर्माण करवाया और नौसेना का गठन किया । इसका अर्थ यह होता है कि समुद्री मार्ग द्‌वारा होने वाले बाहरी आक्रमणों से वे परिचित थे और उसका उपाय भी उन्होंने सोच रखा था। वे राज्याभिषेक करवाकर स्वराज्य के विधिवत नरेश बने। इस राज्याभिषेक के पश्चात उन्होंने धार्मिक दृष्टि से भिन्न विधि द्‌वारा दूसरा राज्याभिषेक करवाया। उनके ये सभी कार्य धार्मिक क्षेत्र में उनके द्‌वारा की गई क्रांतिकारिता को दर्शाते हैं ।

जब-जब स्वराज्य पर प्राणघाती संकट आए; तब-तब सहयोगियों के बदले अथवा उनके साथ स्वराज्य के लिए वे अपने प्राण अर्पित करने के लिए तत्पर रहते थे । परंतु उनकी महानता केवल ऐसे विकट संकटों का धैर्य और निर्भीकता से सामना करने तक सीमित नहीं थी बल्कि वे नैतिकता और गुणवत्ता को स्वराज्य की आधारशिला बनाना चाहते थे । अत: महत्वपूर्ण बातों की तरह छोटी-छोटी बातों के बारे में भी उन्होंने संबंधित व्यक्तियों को आवश्यक वे उचित आदेश दे रखे थे । सैनिक किसान के खेत से सब्जी भी जबरदस्ती नहीं ले सकते; इस प्रकार का आदेश इस दृष्टि से आदर्श ही है । पेड़ काटने पर लगाए गए प्रतिबंध भी अपना महत्व दर्शाते हैं ।

विचार करो

वृक्षों का संवर्धन करना क्यों आवश्यक है?

किले का कूड़ा-कचरा यहाँ-वहाँ, कहीं भी नहीं फेंकना चाहिए । उसे मकान के पिछवाड़ेवाले बगीचे अथवा क्यारियों में जलाएँ और उसकी राख पर सब्जी उगाएँ, यह उनका आदेश था । इससे यह स्पष्ट होता है कि स्वराज्य का निर्माण करते समय वे छोटी-छोटी बातों की ओर कितना ध्यान देते थे । वे केवल योद्‌धा ही नहीं थे अपितु एक नवीन, स्वतंत्र, नीतिवान और सुसंस्कृत समाज का निर्माण करने वाले शिल्पकार थे । उनकी महानता सर्वांगीण है ।

बताओ तो

- तुम्हारे परिसर के कूड़े-कचरे का निपटारा किस प्रकार होता है?
- कूड़े-कचरे का निपटारा करने वाली व्यवस्था का नाम बताओ।

हमारे राष्ट्रीय आंदोलन में शिवाजी महाराज महान प्रेरणा स्थान थे । महात्मा जोतीराव फुले ने

क्या तुम जानते हो ?

महात्मा जोतीराव फुले ने ई. स. १८६९ में छत्रपति शिवाजी महाराज पर एक पोवाड़ा रचा । उसका कुछ अंश यहाँ दिया गया है ।

।। शिवाचा गजर जयनामाचा झेंडा रोविला ।।
।। क्षेत्र्याचा मेळा मावळ्याचा शिकार खेळला ।।
माते पायीं ठेवी डोई गर्व नाहीं काडीचा ।
आशिर्वाद घेई आईचा ।।
आलाबला घेई आवडता होतो जिजीचा ।
पवाडा गातो शिवाजीचा ।।
कुळवाडी - भूषण पवाडा गातो भोसल्याचा ।
छत्रपती शिवाजीचा ।।३।।

समता के संघर्ष में पोवाड़ा द्वारा शिवाजी महाराज की महानता का बखान किया है ।

लोकमान्य तिलक ने शिवजयंती उत्सव के माध्यम से राष्ट्रीय जागृति की । लाला लजपतराय ने शिवाजी महाराज की महत्ता पर एक पुस्तक लिखी है । तमिल काव्य के पितामह सुब्रमण्यम भारती ने शिवाजी महाराज अपने सहयोगियों को संबोधित कर रहे हैं; इस प्रसंग की कल्पना कर काव्य रचना की है । विश्वकवि रवींद्रनाथ ठाकुर ने शिवाजी महाराज पर एक दीर्घ कविता लिखी है । वे शिवाजी महाराज द्वारा किए गए स्वराज्य साधना के प्रयासों की ओर 'महान लक्ष्य साधना के प्रयास' के रूप में देखते हैं । सर जदुनाथ सरकार ने 'शिवाजी एंड हीज टाइम्स' ग्रंथ में छत्रपति शिवाजी महाराज के कार्यों का गौरव किया है । पं. जवाहरलाल नेहरू ने शिवाजी महाराज के विषय में कहा है, 'शिवाजी महाराज केवल महाराष्ट्र के नहीं थे अपितु वे संपूर्ण देश के थे । ... उन्हें अपने देश से बहुत प्रेम था और मानवीय सद्गुणों के वे जीवंत प्रतीक थे ।' भारत की सभी भाषाओं में शिवाजी महाराज से प्रेरणा और आदर्श ग्रहण करनेवाला साहित्य लिखा गया है ।

शिवाजी महाराज के स्वराज्य कार्य की और स्वराज्य को सुराज्य में परिवर्तित करने की यह प्रेरणा भावी पीढ़ियों के लिए आदर्श बनी रहेगी । शिवाजी महाराज महान राष्ट्रपुरुष थे ।

स्वाध्याय

१. पाठ में ढूँढ़कर लिखो :

(१) शिवाजी महाराज के जीवन में खतरे उठाने वाले प्रसंग कौन-से थे ?
(२) शिवाजी महाराज के आगरा से निकल आने के प्रसंग में खतरा उठाने वाले कौन थे ?
(३) शिवाजी महाराज ने रोहिड़ घाटी के देशमुख को क्या चेतावनी दी ?
(४) शिवाजी महाराज की कौन-सी प्रेरणा भावी पीढ़ियों के लिए आदर्श बनी रहेगी ?

२. लेखन करो :

(१) प्रजा को क्षति न पहुँचे; इसके लिए शिवाजी महाराज ने सैनिकों को कौन-सी चेतावनी दे रखी थी ?
(२) शिवाजी महाराज की धार्मिक नीति सहिष्णु थी; यह किस घटना से दिखाई देता है ?
(३) शिवाजी महाराज की सेना विषयक नीति स्पष्ट करो ।

३. एक शब्द में लिखो :

(१) स्वराज्य की नौसेना का महत्वपूर्ण अधिकारी -
(२) शिवाजी महाराज पर काव्य रचना करने वाला तमिल कवि -
(३) बुंदेलखंड में स्वतंत्र राज्य का निर्माण करने वाला -
(४) शिवाजी महाराज की महत्ता पोवाडा द्वारा बताने वाले -

उपक्रम

(१) संकट के समय में मित्र को की गई सहायता का वर्णन कक्षा में करो ।
(२) व्यक्ति के नाम पर जो गाँव, शहर पाए जाते हैं; उनके नामों की सूची बनाइए ।

९. मराठों का स्वतंत्रता युद्ध

छत्रपति शिवाजी महाराज की मृत्यु के पश्चात स्वराज्य की रक्षा करने के लिए मराठों ने छत्रपति संभाजी महाराज, छत्रपति राजाराम महाराज और महारानी ताराबाई के नेतृत्व में मुगलों से प्रखर संघर्ष किया । यह संघर्ष सत्ताईस वर्ष चला । प्रदीर्घ चले इस संघर्ष को 'मराठों का स्वतंत्रता युद्ध' कहते हैं। ई.स.१६८२ में स्वयं औरंगजेब बादशाह दक्षिण में चलकर आया । फिर भी मुगलों के साथ हुए इस युद्ध में अनेक विकट बाधाओं को मात देते हुए मराठे विजयी हुए । भारतीय इतिहास में यह स्वतंत्रता युद्ध रोमहर्षक और तेजस्वी युग रहा है । इस पाठ में हम उस स्वतंत्रता युद्ध का अध्ययन करेंगे ।

यहाँ 'मराठा' शब्द 'मराठी भाषा बोलने वाला' अथवा 'महाराष्ट्र के लोग' अर्थ में है ।

करके देखो

'मैं संभाजीराजे बोल रहा हूँ... अभिनय करो ।

छत्रपति संभाजी महाराज

छत्रपति संभाजी महाराज : छत्रपति संभाजी महाराज शिवाजी महाराज के बड़े बेटे थे । उनका जन्म १४ मई १६५७ को पुरंदर किले में हुआ । शिवाजी महाराज के पश्चात वे छत्रपति बने । उस समय मराठों का मुगलों के साथ संघर्ष जारी था । ऐसी स्थिति में औरंगजेब बादशाह का बेटा शाहजादा अकबर ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया । औरंगजेब ने इस विद्रोह को कुचल दिया । तत्पश्चात अकबर दक्षिण में संभाजी महाराज के आश्रय में चला आया । अकबर का दमन करने हेतु ई.स.१६८२ में स्वयं औरंगजेब दक्षिण में आया । वह अपने साथ विशाल सेना और शक्तिशाली तोपखाना ले आया। उसने जंजीरा के सिद्दी को मराठों के विरोध में अभियान चलाने को कहा । उसने पुर्तगालियों को भी अपने पक्ष में कर लिया । परिणामत: संभाजी महाराज को एक ही समय में कई शत्रुओं का सामना करना पड़ा ।

संभाजी महाराज का कार्यकाल शिवाजी महाराज के पश्चात हुए मराठों के स्वतंत्रता युद्ध का प्रथम अध्याय है । शिवाजी महाराज ने अपने कार्यकाल में ही उन्हें राज्य प्रशासन और सैनिकी अभियानों की उत्तम शिक्षा प्रदान की थी । १४ वर्ष की आयु से ही उन्होंने राज्य प्रशासन और सैनिकी प्रभुत्व की ओर ध्यान देना प्रारंभ किया था । अपनी युवावस्था में उन्होंने मुगलों और आदिलशाही के कई प्रदेशों पर आक्रमण किए । उनके युद्ध कौशल का वर्णन करते हुए तत्कालीन फ्रांसीसी प्रवासी एबे कैरे कहता है, "यह युवराज छोटा है । फिर भी धैर्यशील और अपने पिता की कीर्ति के अनुरूप ही शूर-वीर है.... ।"

संभाजी महाराज के छत्रपति बनने के पश्चात मराठों का मुगलों के साथ चलने वाला संघर्ष अधिक प्रखर हुआ । औरंगजेब का उद्देश्य काबुल से कन्याकुमारी तक मुगलों का एकछत्र शासन निर्माण करना था । अपनी विशाल सैनिकी और आर्थिक शक्ति द्वारा मराठों का राज्य पूर्णत: नष्ट करना उसका स्वप्न था लेकिन संभाजी महाराज ने अपनी वीरता और युद्ध कौशल के बल पर उसका यह स्वप्न धूल में मिला दिया । उनकी सैनिकी टुकड़ियाँ

मुगलों के प्रदेशों पर आक्रमण करतीं । नाशिक के समीप रामसेज का किला था । इस किले को औरंगजेब के सेनानी दीर्घकाल तक प्रयास करने के बावजूद जीत नहीं पाए। इस प्रकार संभाजी महाराज ने अपने शौर्य से औरंगजेब को त्रस्त कर दिया । एक बार तो औरंगजेब ने क्रोध में आकर अपने सिर का मुकुट जमीन पर पटका और प्रतिज्ञा की, ''जब तक इस संभाजी को हरा नहीं दूँगा, तब तक मैं मुकुट नहीं पहनूँगा ।'' संभाजी महाराज ने औरंगजेब को इतना विवश कर दिया था ।

क्या तुम जानते हो ?

प्रारंभ में यह सोचकर कि मराठों के किले जीतने से उनका राज्य समाप्त हो जाएगा; औरंगजेब ने नाशिक के समीप रामसेज किले पर घेरा डाल दिया । औरंगजेब के सैनिक असंख्य थे और मराठों के सैनिक नगण्य थे परंतु उन्होंने कड़ा प्रतिकार किया । यह घेरा आगे चलकर पाँच वर्ष तक जारी रहा । मुट्ठी भर मराठा सैनिकों द्वारा दिखाई गई यह वीरता अद्‌वितीय थी । मराठों द्वारा किए गए इस कड़े प्रतिकार के कारण औरंगजेब को बोध हो गया कि मराठों के साथ संघर्ष करना बहुत कठिन है ।

सिद्‌दी के विरुद्‌ध अभियान : जंजीरा का सिद्‌दी मराठी प्रदेश में उत्पात मचाता था । मराठों के प्रदेशों पर धावा बोलकर वह आगजनी, लूटपाट और अत्याचार करता था । बखरकार (इतिहासकार) सभासद ने उसका वर्णन इन शब्दों में किया है, 'घर में जैसे चूहे, वैसे राज्य में सिद्‌दी ।' संभाजी महाराज ने ई. स. १६८२ में उसके विरुद्‌ध अभियान चलाया। मराठों ने सिद्‌दी के अधिकारवाले दंडाराजपुरी किले को घेर लिया और जंजीरा पर भी जबर्दस्त तोपें दागीं परंतु ठीक उसी समय मुगलों ने स्वराज्य पर आक्रमण किया । फलस्वरूप संभाजी महाराज को जंजीरा अभियान अधूरा छोड़कर लौट आना पड़ा ।

पुर्तगालियों के विरुद्‌ध अभियान : गोआ के पुर्तगाली संभाजी महाराज के विरुद्‌ध औरंगजेब से मिल गए थे । अत: संभाजी महाराज ने पुर्तगालियों को सबक सिखाने का निश्चय किया। उन्होंने ई.स.१६८३ में पुर्तगालियों के रेवदंडा बंदरगाह पर धावा बोला । इसके प्रत्युत्तर में पुर्तगालियों ने गोआ की सीमा पर स्थित मराठों के फोंडा किले को घेर लिया। मराठों ने घेरा तोड़ा और गोआ पर आक्रमण किया । इस युद्‌ध में येसाजी ने शौर्य की पराकाष्ठा की। इसमें पुर्तगाली गवर्नर हताहत हुआ । उसे पीछे हटना पड़ा। संभाजी महाराज ने उसका पीछा किया । पुर्तगाली बड़े संकट में घिर गए । उसी समय संभाजी महाराज को मुगलों द्वारा दक्षिण कोकण पर आक्रमण किए जाने का समाचार प्राप्त हुआ । फलस्वरूप हाथ आई गोआ की सफलता को छोड़कर उन्हें मुगलों का प्रतिकार करने के लिए लौट आना पड़ा ।

आदिलशाही और कुतुबशाही का अंत : मराठों के विरुद्‌ध चलाए जा रहे अभियान में औरंगजेब को सफलता प्राप्त नहीं हो रही थी । अत: उसने मराठों के विरुद्‌ध उस अभियान को स्थगित किया। अब उसने आदिलशाही और कुतुबशाही राज्यों के विरुद्‌ध मोर्चा खोला । औरंगजेब ने ये राज्य जीत लिए ।

इन दोनों राज्यों की संपत्ति और सैनिकी सामग्री मुगलों के हाथ लगी । परिणामत: औरंगजेब की स्थिति दृढ़ हो गई । इसके पश्चात औरंगजेब ने मराठों को पराजित करने के लिए अपनी सारी शक्ति केंद्रित की । उसने मराठी प्रदेश पर चारों ओर से हमले किए । मुगल सेना का प्रतिकार करते समय मराठा सेनापति हंबीरराव मोहिते वीरगति को प्राप्त हुआ । फलस्वरूप संभाजी महाराज का सेना पक्ष दुर्बल हो गया ।

संभाजी महाराज का राज्य प्रशासन : यद्‌यपि संभाजी महाराज युद्‌ध की दौड़-धूप में निरंतर व्यस्त रहे; फिर भी अपने राज्य प्रशासन के प्रति लापरवाह नहीं रहे । उन्होंने शिवाजी महाराज के कार्यकाल में प्रचलित निरपेक्ष न्यायप्रथा और राजस्व व्यवस्था को उसी रूप में आगे भी जारी रखा । स्वराज्य के

विरुद्‌ध विद्रोह करने वाले तथा सामान्य प्रजा को कष्ट पहुँचाने वाले वतनदारों अथवा जागीदारों को कठोर दंड दिया । महारानी येसूबाई को राज्य प्रशासन के अधिकार दिए । उनकी अपनी मुद्रा बनवाकर दी । शिवाजी महाराज की प्रजाहित की नीति को उन्होंने अपने कार्यकाल में आगे जारी रखा।

संभाजी महाराज को संस्कृत भाषा के साथ कई भाषाएँ अवगत थीं । उन्होंने ग्रंथ भी लिखे । राजनीति पर लिखे गए प्राचीन भारतीय ग्रंथों का अध्ययन किया और उन ग्रंथों का सार उन्होंने 'बुधभूषण' ग्रंथ में प्रस्तुत किया ।

क्या तुम जानते हो ?

संभाजी महाराज ने संस्कृत भाषा में 'बुधभूषणम्' ग्रंथ की रचना की । इस ग्रंथ के दूसरे अध्याय में राजनीति का उल्लेख हुआ है । इसमें शासक के लक्षण, प्रधान, राजपुत्र, उनकी शिक्षा-दीक्षा और कार्य, शासक के सलाहकार, गढ़, गढ़ पर लगने वाली सामग्री, सेना, शासक के कर्तव्य, गुप्तचर व्यवस्था आदि के विषय में जानकारी दी गई है ।

संभाजी महाराज की मृत्यु : औरंगजेब संभाजी महाराज को मात देने के प्रयत्नों की पराकाष्ठा कर रहा था । उसने मुकर्रब खान को कोल्हापुर प्रांत में नियुक्त किया था । मुकर्रब खान को समाचार मिला कि संभाजी महाराज कोकण में संगमेश्वर नामक स्थान पर हैं। उसने छापा मारकर संभाजी महाराज को बंदी बनाया। उन्हें औरंगजेब के सामने लाया गया । संभाजी महाराज ने उसके सामने अपना आत्मसम्मान नहीं त्यागा। इसके बाद बादशाह के आदेश पर ११ मार्च १६८९ को उनकी अति क्रूरतापूर्वक हत्या की गई । मराठों के छत्रपति संभाजी महाराज ने अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए वीरतापूर्वक मृत्यु का सामना किया । उनके बलिदान से प्रेरणा लेकर अब मराठों ने मुगलों के विरुद्‌ध अपना संघर्ष अधिक प्रखर किया।

छत्रपति राजाराम महाराज

छत्रपति राजाराम महाराज : राजाराम महाराज शिवाजी महाराज के द्‌वितीय बेटे थे । उनका जन्म २४ फरवरी १६७० को रायगढ़ में हुआ । संभाजी महाराज की मृत्यु के पश्चात वे छत्रपति बने। औरंगजेब को लगा कि मराठों का राज्य जीतने का उसका स्वप्न अब पूरा होगा । परिणामत: उसने रायगढ़ को घेरने के लिए जुल्फिकार खान को भेजा । उस समय राजाराम महाराज और उनकी पत्नी महारानी ताराबाई, संभाजी महाराज की पत्नी येसूबाई और उनका बेटा शाहू रायगढ़ में ही थे । इन सभी का एक ही स्थान पर रहना असुरक्षित था । इस स्थिति में येसूबाई ने इस विकट संकट का सामना बड़े धैर्य के साथ किया । किसी भी हालत में मुगलों के सामने घुटने नहीं टेकने हैं, यह निश्चय कर उन्होंने रायगढ़ पर महत्वपूर्ण राजनीतिक निर्णय लिए । इसके अनुसार यह नीति तय की गई कि राजाराम महाराज रायगढ़ के घेरे से बाहर निकलें और आवश्यकता पड़ने पर जिंजी जाएँ तथा महारानी येसूबाई अपने नेतृत्व में रायगढ़ पर युद्‌ध करें । येसूबाई ने छत्रपति पद पर अपने बेटे को न बिठाकर राजाराम महाराज को छत्रपति पद देने का निर्णय किया । यह निर्णय स्वराज्य के प्रति उनका प्रेम और स्वार्थत्याग की पराकाष्ठा का उदाहरण है । उन्होंने अपने और अपने पुत्र के प्राणों की परवाह न करते हुए मराठों के छत्रपति को सुरक्षित रखा ।

चलो, ढूँढ़ें

भारत के मानचित्र में 'जिंजी' स्थान ढूँढ़ो ।

राजाराम महाराज का जिंजी प्रस्थान : ५ अप्रैल १६८९ को राजाराम महाराज अपने कुछ सहयोगियों

के साथ रायगढ़ के घेरे से निकल गए । उन्होंने दक्षिण में जिंजी जाने का निर्णय किया । जिंजी का किला अभेद्‌य था । इस किले को जीतना मुगलों के लिए सरल नहीं था। प्रह्‌लाद निराजी, खंडो बल्लाल, रूपाजी भोसले आदि विश्वसनीय सहयोगियों को अपने साथ लेकर राजाराम महाराज जिंजी पहुँचे ।

मराठों की गतिविधियाँ : मुगलों की सामर्थ्य के आगे रायगढ़ का युद्‌ध लंबे समय तक जारी रखना कठिन था । मुगलों ने नवंबर १६८९ में रायगढ़ अपने अधिकार में कर लिया और महारानी येसूबाई तथा शाहू को बंदी बनाया । जिंजी को प्रस्थान करते समय राजाराम महाराज ने मुगलों के विरुद्ध संघर्ष जारी रखने का दायित्व रामचंद्रपंत अमात्य, शंकराजी नारायण सचिव, संताजी घोरपड़े और धनाजी जाधव को सौंपा था ।

मराठों की दृष्टि से यह निर्णायक स्थिति थी । औरंगजेब ने कई मराठी सरदारों को वतनदारी और जागीरें देकर अपने पक्ष में कर लिया था । राजाराम महाराज ने भी औरंगजेब के प्रत्युत्तर में यही नीति अपनाई । उनके द्‌वारा आश्वासन दिया गया कि जो मराठी सरदार मुगल प्रदेश जीतेगा; उस सरदार को वह प्रदेश जागीर के रूप में दिया जाएगा । छत्रपति द्‌वारा दिए गए आश्वासन के कारण अनेक वीर-पराक्रमी सरदार आगे बढ़े । उन्होंने मुगल प्रदेश पर धड़ल्ले के साथ आक्रमण प्रारंभ किए । कई मुगल सेनानियों को पराजित किया । इस पराक्रम में संताजी और धनाजी सबसे आगे थे । उनके अप्रत्याशित हमले और गुरिल्ला युद्‌ध नीति के आगे मुगलों को अपनी विपुल साधन सामग्री और भारी-भरकम तोपखाने का उपयोग करना कठिन हो गया। पर्याप्त किले, प्रदेश और धन न होने पर भी मराठों ने मुगलों को ऐसा तंग किया कि उन्हें भागने के लिए राह भी न मिली । एक बार तो संताजी घोरपड़े और विठोजी चव्हाण ने औरंगजेब की छावनी पर अचानक आक्रमण किया और उसके खेमे के ऊपर लगा सोने का कलश काटकर ले गए ।

जिंजी का घेरा : रायगढ़ को अपने अधिकार में

क्या तुम जानते हो ?

मुगल सैनिक धनाजी से इतने भयभीत रहते थे कि यदि पानी पीते समय घोड़ा बिदक जाए तो वे घोड़े से पूछते थे, ‘‘क्यों रे ? क्या तुझे पानी में धनाजी दिखाई देता है ?’’

कर लेने के बाद औरंगजेब ने जुल्फिकार खान को दक्षिण में जिंजी के अभियान पर भेजा । उसने जिंजी को घेर लिया । लगभग आठ साल तक मराठे पराकाष्ठा के साथ जिंजी किले का युद्‌ध करते रहे । संताजी और धनाजी ने घेरा डाले हुए मुगल सैनिकों पर बाहर से प्रखर हमले किए । अंततः राजाराम महाराज घेरे से निकलकर महाराष्ट्र में लौट आए । इसके पश्चात जुल्फिकार खान ने जिंजी किला जीता ।

राजाराम महाराज के महाराष्ट्र में लौट आने से मराठों में वीरता का संचार हुआ । उन्होंने मुगलों के अधिकारवाले खान्देश, वऱ्हाड (बरार), बागलाण प्रदेशों पर हमले किए । राजाराम महाराज ने अपनी सूझ-बूझ और कूटनीति से संताजी और धनाजी जैसे सैकड़ों वीर मराठा तैयार किए । उनमें स्वराज्य रक्षण की प्रेरणा निर्माण करने का उल्लेखनीय कार्य किया परंतु यह सब कुछ चल रहा था; तभी २ मार्च १७०० को राजाराम महाराज का सामान्य-सी बीमारी के कारण सिंहगढ़ पर निधन हो गया ।

राजाराम महाराज स्वभाव से विचारशील और मिलनसार थे । मराठी राज्य के सभी पराक्रमी वीरों को उन्होंने एकसूत्र में बाँधा । उनमें एकता निर्माण की और चेतना फूँकी । संभाजी महाराज की मृत्यु के बाद ११ साल तक उन्होंने औरंगजेब के साथ धैर्यपूर्वक और जीवटता से प्रखर संघर्ष किया । बड़े विकट समय में राजाराम महाराज ने स्वराज्य की रक्षा की । राजाराम महाराज का यह सबसे बड़ा उल्लेखनीय कार्य है।

रियासत (रियासतकार) गो. स. सरदेसाई ने छत्रपति राजाराम का वर्णन करते हुए उनके लिए ‘स्थिरबुद्‌धि’ विशेषण का उपयोग किया है । उनके

द्‌वारा प्रयुक्त यह विशेषण पूर्णतः सटीक और यथार्थ लगता है ।

करके देखो

- अपने परिसर की उन महिलाओं का साक्षात्कार लो; जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किया है ।

महारानी ताराबाई : छत्रपति राजाराम महाराज की मृत्यु के पश्चात औरंगजेब को लगा कि अब हमने विजय पा ली परंतु स्थिति बड़ी विपरीत थी। औरंगजेब एक के बाद दूसरी लड़ाई जीतता जा रहा था परंतु वह समग्र युद्‌ध जीत नहीं पा रहा था । अत्यंत विपरीत परिस्थिति में स्वराज्य की बागडोर हाथ में लेने के लिए राजाराम महाराज की वीरांगना पत्नी महारानी ताराबाई आगे बढ़ीं ।

महारानी ताराबाई

मुगल इतिहासकार खाफी खान ने महारानी ताराबाई का गौरव इन शब्दों में किया है, ''वह (ताराबाई) बुद्‌धिमान और चतुर थीं । सैनिकी प्रबंधन और राज्य प्रशासन के विषय में पति के रहते उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी ।''

छत्रपति राजाराम महाराज की मृत्यु के पश्चात महारानी ताराबाई ने अपने सरदारों की सहायता से अति प्रतिकूल स्थिति में स्वतंत्रता युद्‌ध को पूरे प्रयास से जारी रखा । औरंगजेब ने मराठों के प्रदेश सातारा, पन्हाला जीत लिए तो मराठे मुगलों के मध्य प्रदेश, गुजरात तक बढ़ गए । ताराबाई ने युद्‌ध क्षेत्र को फैला दिया। कृष्णाजी सावंत, खंडेराव दाभाड़े, धनाजी जाधव, नेमाजी शिंदे जैसे सरदार महाराष्ट्र के बाहर मुगलों के साथ संघर्ष करने लगे । यह युद्‌ध का पलड़ा बदलते जाने का संकेत था ।

महारानी ताराबाई ने सात वर्ष संघर्ष किया और राज्य की रक्षा की । संपूर्ण प्रशासन को अपने नियंत्रण में लेकर सभी सरदारों को स्वराज्य के कार्य से जोड़ दिया । मराठे सरदार सिरोंज, मंदसौर, मालवा तक पहुँचकर मुगलों के साथ लड़ने लगे । खाफी खान ने लिखा है, ''राजाराम की पत्नी ताराबाई ने विलक्षण घमासान मचाया । इसमें उसके

क्या तुम जानते हो ?

महारानी ताराबाई ने गुरिल्ला (छापामार) युद्‌ध नीति का बहुत भली-भाँति उपयोग किया। औरंगजेब की सेना के सम्मुख मराठों की शक्ति अत्यंत कम थी। किला जीतने के लिए औरंगजेब किले को घेर लेता । जहाँ तक संभव है; उतने समय तक मराठा किले का युद्‌ध लड़ते । वर्षाकाल समीप आते ही ऐसा जताया जाता मानो मराठा किलेदार भेदी बन गया है । इसके बाद औरंगजेब से प्रलोभन की राशि लेकर किला उसे सौंपा जाता । किलेदार प्रलोभन राशि को मराठी कोष में जमा कर देता। औरंगजेब किले में अनाज, धन, गोला-बारूद आदि का जैसे ही संग्रह कर रखता वैसे ही ताराबाई उस किले को जीत लेतीं । ताराबाई की इस युद्‌ध तकनीक का वर्णन 'सेफ डिपॉजिट लॉकर सिस्टम' इस रूप में किया जाता है ।

सैनिकी नेतृत्व और युद्ध अभियानों के प्रबंध के गुण प्रखरता से प्रकट हुए। परिणामतः मराठों के आक्रमण और युद्ध की गतिमानता दिन-प्रति-दिन बढ़ती गई ।'

क्या तुम जानते हो ?

ताराबाई के पराक्रम का वर्णन करते हुए 'शिवभारतकार' परमानंद का लड़का कवि देवदत्त कहते हैं,

ताराबाई रामराणी । भद्रकाली कोपली ।
दिल्ली झाली दीनवाणी । दिल्लीशाचे गेले पाणी ।
रामराणी भद्रकाली । रणरंगी क्रुद्ध झाली ।
प्रयत्नाची वेळ आली । मुगल हो सांभाळा ।।

इस प्रकार छत्रपति शिवाजी महाराज के पराक्रम और वीरता की विरासत का निर्वाह महारानी ताराबाई ने किया ।

मराठों के आक्रामक आक्रमणों से औरंगजेब हताश हो गया । मुगल-मराठों का यह संघर्ष लगातार पच्चीस वर्ष चल रहा था । मराठों को पराजित करना मुगलों के लिए संभव न हुआ । ऐसी स्थिति में ई.स.१७०७ में औरंगजेब की अहमदनगर में मृत्यु हुई । उसकी मृत्यु के साथ ही मराठों का स्वतंत्रता युद्ध समाप्त हो गया ।

मराठों का यह स्वतंत्रता युद्ध मुगल सत्ताधीशों की साम्राज्य लालसा और मराठों के मन में स्थित स्वतंत्रता की आकांक्षा के बीच का युद्ध था । इसमें मराठों की विजय हुई । यही नहीं बल्कि औरंगजेब की मृत्यु के कारण जो राजनीतिक रिक्तता कालांतर में उत्पन्न हो गई थी; उसको भरने में मराठा अग्रसर रहे । उन्होंने दिल्ली के सिंहासन पर अंकुश रखते हुए लगभग संपूर्ण भारत का शासन चलाया और उसकी रक्षा भी की । परिणामतः अठारहवीं शताब्दी को मराठों की शताब्दी कहा जाता है । इस शताब्दी के मराठों के कार्यों और पराक्रम का इतिहास हम अगले पाठ में देखेंगे ।

भोसले घराने की वंशावली

- मालोजीराजे
  - शहाजीराजे (ई.स.१५९४ से १६६४)
    - संभाजी
    - छत्रपति शिवाजी महाराज (ई.स.१६३० से १६८०)
      - छत्रपति संभाजी महाराज (ई.स.१६५७ से १६८९)
        - छत्रपति शाहू महाराज (ई.स.१६८२ से १७४९)
          - छत्रपति रामराजा (दत्तक, ई.स. १७५० से १७७७)
      - छत्रपति राजाराम महाराज (ई.स.१६७० से १७००)
        - छत्रपति शिवाजी (ताराबाई पुत्र)
          - रामराजा (सातारा गद्दी को दत्तक)
        - छत्रपति संभाजी (राजसबाई पुत्र)
    - व्यंकोजी

स्वाध्याय

१. उचित विकल्प चुनो :

(१) औरंगजेब इसके पराक्रम से त्रस्त हो गया था –
(अ) शाहजादा अकबर (ब) छत्रपति संभाजी महाराज (क) छत्रपति राजाराम महाराज

(२) औरंगजेब के खेमे के ऊपर लगा सोने का कलश काटकर ले जाने वाले –
(अ) संताजी और धनाजी (ब) संताजी घोरपडे और विठोजी चव्हाण (क) खंडो बल्लाल और रूपाजी भोसले

(३) गोआ के युद्ध में पराक्रम की पराकाष्ठा करनेवाला –
(अ) येसाजी कंक (ब) नेमाजी शिंदे
(क) प्रह्लाद निलाजी

२. पाठ में ढूँढ़कर लिखो :

(१) संभाजी महाराज को जंजीरा का अभियान अधूरा छोड़कर क्यों लौट आना पड़ा ?

(२) संभाजी महाराज ने पुर्तगालियों को सबक सिखाने का निश्चय क्यों किया ?

(३) जिंजी जाते समय राजाराम महाराज ने स्वराज्य की रक्षा का दायित्व किसपर सौंपा ?

(४) कवि देवदत्त ने महारानी ताराबाई के पराक्रम का वर्णन किन शब्दों में किया है ?

३. क्यों ? वह लिखो :

(१) औरंगजेब ने आदिलशाही और कुतुबशाही की ओर अपना मोर्चा खोला।

(२) संभाजी महाराज के पश्चात मराठे मुगलों के साथ आर-पार का युद्ध करने के लिए तैयार हो गए ।

(३) यह नीति तय की गई कि महारानी येसूबाई के नेतृत्व में रायगढ़ का युद्ध किया जाए ।

उपक्रम

भारत के मानचित्र में गोआ, बीजापुर, गोलकुंडा, जिंजी, अहमदाबाद और अहमदनगर स्थानों को दर्शाओ ।

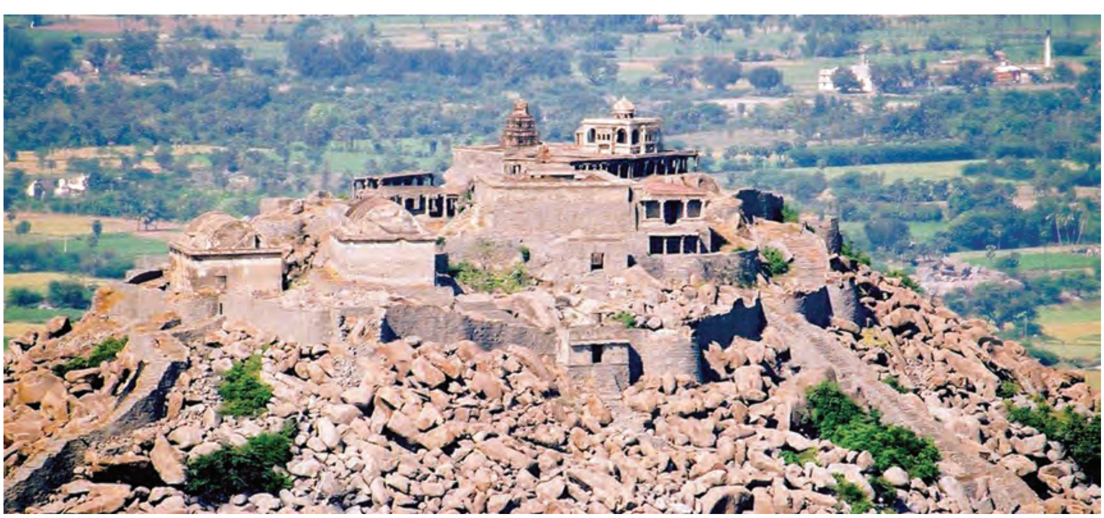

जिंजी का किला

१०. मराठी सत्ता का विस्तार

मराठों द्वारा लड़े गए स्वतंत्रता युद्ध के प्रारंभ में मुगल सत्ता आक्रामक थी तो मराठों की नीति सुरक्षात्मक थी। स्वतंत्रता युद्ध के अंत में स्थिति उलट गई । मराठों ने आक्रमण की और मुगलों ने सुरक्षा की नीति अपनाई। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मराठों ने मुगलों को पराजित कर लगभग संपूर्ण भारत में अपनी सत्ता का विस्तार किया । इस पाठ में हम उसका अध्ययन करेंगे।

शाहू महाराज को मुक्त किया गया : औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात दिल्ली की सत्ता को लेकर उसके पुत्रों में संघर्ष प्रारंभ हुआ । शाहजादा आजमशाह दक्षिण में था । राज सिंहासन पाने के लिए वह बड़ी तत्परता से दिल्ली की ओर चल पड़ा। राजपुत्र शाहू उसके अधिकार में थे । आजमशाह ने सोचा कि यदि शाहू महाराज को मुक्त किया जाए तो महारानी ताराबाई और शाहू महाराज के बीच छत्रपति की गद्दी को लेकर विवाद उत्पन्न होगा और मराठी सत्ता निर्बल हो जाएगी । इसलिए उसने शाहू महाराज को मुक्त किया।

शाहू महाराज का राज्याभिषेक : मुक्त होते ही शाहू महाराज महाराष्ट्र की ओर चल पड़े । कुछ मराठी सरदार उनसे आकर मिले परंतु महारानी ताराबाई ने छत्रपति पद पर शाहू महाराज के अधिकार को मान्य नहीं किया । पुणे जिले में भीमा नदी के किनारे खेड़ नामक स्थान पर शाहू महाराज और महारानी ताराबाई के सैनिकों के बीच युद्ध हुआ। इस युद्ध में शाहू महाराज की विजय हुई । उन्होंने सातारा को जीत लिया और स्वयं का राज्याभिषेक करवाया । सातारा मराठा राज्य की राजधानी बनी ।

शाहू महाराज

कुछ समय तक शाहू महाराज और महारानी ताराबाई के बीच का विरोध जारी रहा । ई.स. १७१० में महारानी ताराबाई ने पन्हालगढ़ पर अपने अल्पायु पुत्र शिवाजी (द्वितीय) की छत्रपति के रूप में घोषणा की । तब से मराठाशाही में सातारा राज्य के अलावा कोल्हापुर का स्वतंत्र राज्य अस्तित्व में आया।

शाहू महाराज का पूर्व जीवन मुगलों की छावनी में बीता था । अतः उन्होंने मुगलों की राजनीति को बहुत निकट से देखा था । उत्तर भारत की राजनीति की बारीकियाँ उनके ध्यान में आ गई थीं । मुगल सत्ता के शक्तिशाली पक्ष और दुर्बल पक्ष से वे भली-भाँति अवगत हो गए थे । इसके अलावा मुगल दरबार के प्रभावशाली लोगों से उनका परिचय भी हुआ था । इन सभी बातों का उपयोग उन्हें बदलती परिस्थिति में मराठों की राजनीति की दिशा निश्चित करने के लिए हुआ ।

मराठों के राज्य को नष्ट करना; यह पहले से औरंगजेब की नीति थी परंतु उसके उत्तराधिकारियों ने इस नीति का त्याग किया था । फलतः अब मुगल सत्ता के साथ संघर्ष करने के स्थान पर उसके रक्षक के रूप में आगे आना और इसी में से अपनी सत्ता का विस्तार करना; यह नई राजनीतिक नीति मराठों ने अपनाई । नए मंदिर का निर्माण करवाने से जो पुण्य प्राप्त होता है, वही पुण्य पुराने मंदिर के जीर्णोद्धार करने से मिलता है; यह नीतिसूत्र था।

मुगल सत्ता को जितना भय पश्चिमोत्तर से होने वाले ईरानी, अफगानी आक्रमणों से था; उतना ही खतरा आस-पास के स्थानीय सत्ताधीशों-पठान, राजपूत, जाट, रुहेलों से था । इसके अलावा दरबार में चलने वाली प्रतिस्पर्धा और आपसी संघर्ष के कारण भी मुगल सत्ता भीतर से खोखली हो चुकी थी। फलतः दिल्ली दरबार को मराठों की सहायता की आवश्यकता अनुभव हो रही थी ।

बालाजी विश्वनाथ : मुगलों की कैद से शाहू महाराज के मुक्त होने के बाद उन्होंने बालाजी विश्वनाथ भट को पेशवा बनाया । बालाजी मूलतः कोकण के श्रीवर्धन गाँव का था । वह पराक्रमी और अनुभवी था । उसने अनेक सरदारों को यह समझा-बुझाकर कि शाहू महाराज ही मराठी सत्ता के सच्चे अधिकारी हैं; उन्हें शाहू महाराज के पक्ष में कर लिया ।

कान्होजी आंग्रे मराठी नौसेना का प्रमुख था । उसने ताराबाई का पक्ष लिया और शाहू महाराज के प्रदेशों पर हमले किए । शाहू महाराज के सम्मुख जटिल स्थिति उत्पन्न हो गई । इस स्थिति में उन्होंने बालाजी को कान्होजी आंग्रे के विरुद्ध भेजा। बालाजी ने युद्ध टालकर कूटनीति से कान्होजी को शाहू महाराज के पक्ष में कर लिया ।

चौथ-सरदेशमुखी का आदेशपत्र : महाराष्ट्र में शाहू महाराज का स्थान दृढ़ करने के पश्चात बालाजी ने अपना ध्यान उत्तर की राजनीति की ओर मोड़ा। औरंगजेब की मृत्यु के बाद दिल्ली के दरबार में फूट और अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। वहाँ सैयद भाइयों-अब्दुल्ला(हसन) और हुसैन अली का प्रभुत्व निर्माण हो गया था । बालाजी ने उनकी सहायता से ई.स.१७१९ में मुगल शासक से दक्खन के मुगल प्रदेश के कुछ स्थानों से चौथ तो कुछ स्थानों से सरदेशमुखी वसूल करने के आदेशपत्र प्राप्त किए । चौथ का अर्थ भू-राजस्व (लगान) का एक चौथाई हिस्सा तथा सरदेशमुखी का अर्थ संपूर्ण भू-राजस्व (लगान) का दसवाँ हिस्सा होता है ।

बाजीराव प्रथम

बाजीराव प्रथम : बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु के बाद शाहू महाराज ने ई.स.१७२० में उसके बेटे बाजीराव (प्रथम) को पेशवा पद पर नियुक्त किया । उसने अपने पेशवा पद के बीस वर्ष के कार्यकाल में मराठी सत्ता का विस्तार किया ।

पालखेड़ में निजाम की पराजय : मुगल शासक फर्रूकसियर ने निजाम-उल-मुल्क को दक्खन के सूबेदार के रूप में नियुक्त किया। ई.स.१७१३ में निजाम ने हैदराबाद में अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करने का प्रयास किया । मुगल शासक ने मराठों को दक्षिण के मुगल प्रदेश से चौथ और सरदेशमुखी वसूल करने के अधिकार दिए थे । निजाम ने इस अधिकार को विरोध किया । उसने पुणे परगना का कुछ हिस्सा जीत लिया । बाजीराव ने निजाम पर अंकुश लगाने का निश्चय किया । उसने औरंगाबाद के समीप पालखेड़ में निजाम को पराजित किया । चौथ-सरदेशमुखी वसूल करने के मराठों के अधिकार को निजाम ने स्वीकार किया ।

बाजीराव जानता था कि मुगल सत्ता दुर्बल हो चुकी है । इसलिए उत्तर में सत्ता का विस्तार करने के लिए अधिक अवसर है । शाहू महाराज ने बाजीराव की इस नीति का समर्थन किया ।

मालवा : वर्तमान मध्य प्रदेश में मालवा क्षेत्र है। यह क्षेत्र मुगलों के अधिकार में था । बाजीराव ने अपने भाई चिमाजी अप्पा के नेतृत्व में मल्हारराव होळकर, राणोजी शिंदे और उदाजी पवार को मालवा में भेजा । वहाँ उन्होंने अपने केंद्र स्थापित किए ।

बुंदेलखंड : वर्तमान मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के झाँसी, पन्ना, सागर आदि नगरों के परिसर का प्रदेश बुंदेलखंड है।

छत्रसाल राजा ने बुंदेलखंड में अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित किया था। इलाहाबाद का मुगल सूबेदार मुहम्मद खान बंगश ने बुंदेलखंड पर आक्रमण किया । उसने छत्रसाल को पराजित किया । तब छत्रसाल ने बाजीराव से सहायता की प्रार्थना की ।

बाजीराव विशाल सेना लेकर बुंदेलखंड पहुँचा । उसने बंगश को पराजित किया । छत्रसाल ने बाजीराव का बड़ा सम्मान किया । इस प्रकार मराठों ने मालवा और बुंदेलखंड में अपना वर्चस्व स्थापित किया ।

बाजीराव ने मुगल शासक से मालवा की सूबेदारी माँगी । मुगल शासक ने यह माँग अस्वीकार

क्या तुम जानते हो ?

छत्रसाल ने सहायता के लिए बाजीराव को एक पत्र लिखा । इस पत्र में छत्रसाल ने लिखा,'जो गत आह गजेंद्र की, वह गत आई है आज । बाजी जान बुंदेल की, बाजी राखो लाज ।' (अर्थात मेरी हालत वैसी ही दयनीय हो गई है; जैसे किसी मगरमच्छ ने गजेंद्र के पैर मुँह में पकड़ लिए हों । मैं विकट संकट में हूँ । अब मेरी सहायता आप ही कर सकते हैं ।)

की । अतः मार्च १७३७ में बाजीराव दिल्ली पर आक्रमण करने के उद्‌देश्य से दिल्ली की सीमा पर जा पहुँचा।

भोपाल की लड़ाई : बाजीराव के आक्रमण से मुगल शासक परेशान हो गया । दिल्ली की रक्षा करने हेतु उसने निजाम को बुला लिया । विशाल सेना के साथ निजाम ने बाजीराव पर आक्रमण किया । बाजीराव ने उसे भोपाल में पराजित किया । निजाम ने मराठों को मालवा की सूबेदारी का आदेशपत्र मुगल शासक से प्राप्त करवा देना स्वीकार किया ।

पुर्तगालियों की पराजय : कोकण के तटीय क्षेत्र में वसई, ठाणे पुर्तगालियों के अधिकार में थे । पुर्तगाली शासक प्रजा पर अत्याचार करते थे । बाजीराव ने अपने भाई चिमाजी अप्पा को उनका दमन करने के लिए भेजा । उसने ठाणे और आसपास का प्रदेश जीत लिया । इसके पश्चात ई.स.१७३९ में उसने वसई के किले को घेर लिया । किला बहुत मजबूत था । पुर्तगालियों के पास प्रभावी तोपें थीं परंतु चिमाजी ने बड़ी जीवटता से घेरा जारी रख पुर्तगालियों को आत्मसमर्पण करने के लिए विवश किया । परिणामतः वसई का किला और पुर्तगालियों का बहुत बड़ा प्रदेश मराठों के अधिकार में आया ।

बाजीराव की मृत्यु : ईरान का शासक नादिरशाह ने भारत पर आक्रमण किया । शाहू महाराज के आदेश पर बाजीराव विशाल सेना लेकर उत्तर की ओर चल पड़ा । वह बुरहानपुर तक पहुँचा परंतु तब तक नादिरशाह दिल्ली की विपुल संपत्ति लूटकर अपने देश को लौट गया था । अप्रैल १७४० में नर्मदा के तट पर रावेरखेड़ी में बाजीराव की मृत्यु हुई ।

बाजीराव उत्तम सेनानी था । बाजीराव ने अपनी वीरता और पराक्रम से उत्तर भारत में मराठों का वर्चस्व स्थापित किया । उसने मराठी सत्ता को संपूर्ण भारत के स्तर पर एक शक्तिशाली सत्ता के रूप में स्थान प्राप्त करवाया । उसके कार्यकाल में शिंदे, होलकर, पवार, गायकवाड़ घराने आगे आए ।

स्वाध्याय

१. किसे कहते हैं ?

(१) चौथ –

(२) सरदेशमुखी –

२. एक शब्द में लिखो :

(१) बालाजी मूलतः कोकण के इस गाँव का था....।

(२) बुंदेलखंड में इसका राज्य था ....।

(३) बाजीराव की मृत्यु इस स्थान पर हुई ....।

(४) इसने पुर्तगालियों को हराया ....।

३. लेखन करो :

(१) कान्होजी आंग्रे (२) पालखेड़ का युद्‌ध

(३) बालाजी विश्वनाथ (४) बाजीराव प्रथम

४. कारण लिखो :

(१) मराठाशाही में दो स्वतंत्र राज्यों का निर्माण हुआ।

(२) आजमशाह ने छत्रपति शाहू महाराज को मुक्त किया ।

(३) दिल्ली शासक को मराठों की सहायता की आवश्यकता अनुभव हुई ।

उपक्रम

महारानी ताराबाई का चरित्र प्राप्त करो और उनके जीवन के उन प्रसंगों को कक्षा में अभिनय सहित प्रस्तुत करो; जो प्रसंग तुम्हें प्रभावित करते हैं।

११. राष्ट्ररक्षक मराठे

बाजीराव के पश्चात शाहू महाराज ने उसका बेटा बालाजी बाजीराव अर्थात नानासाहेब को पेशवाई के वस्त्र दिए । नादिरशाह के आक्रमण के बाद दिल्ली में अस्थिरता उत्पन्न हो गई थी । इस स्थिति में नानासाहब ने उत्तर में मराठी सत्ता को दृढ़ करने के प्रयास किए । इस कालावधि में अहमदशाह अब्दाली ने पानीपत में मराठों के सम्मुख चुनौती खड़ी की । इस पाठ में हम इन सभी घटनाओं की जानकारी प्राप्त करेंगे ।

उत्तर में स्थिति : अयोध्या प्रांत की पश्चिमोत्तर दिशा से सटे हिमालय के तलहटीवाले प्रदेश को अठारहवीं शताब्दी में रुहेलखंड कहते थे । अफगानिस्तान से आए हुए पठान इस क्षेत्र में स्थायी रूप में बस गए थे । इन पठानों को रुहेले कहते थे । गंगा-यमुना नदियों के दोआब प्रदेश में इन रुहेलों ने उत्पात मचा रखा था । उनका दमन करने के लिए अयोध्या के नवाब ने मराठों को आमंत्रित किया। मराठों ने रुहलों का दमन किया।

अफगानों से संघर्ष : अफगानिस्तान का शासक अहमदशाह अब्दाली को भारत की संपत्ति के प्रति आकर्षण था। ई.स.१७५१ में उसने पंजाब पर आक्रमण किया । उस समय मुगल प्रदेश में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हुई थी । फलतः मुगलों को अब्दाली के आक्रमण का भय था । इस स्थिति में मुगलों ने अपनी रक्षा के लिए मराठों से सहायता लेना आवश्यक माना । मुगल शासक को मराठों की सामर्थ्य और ईमानदारी का विश्वास हो गया था । दिल्ली की रक्षा करने के लिए मराठों से बढ़कर किसी भी दूसरी सत्ता में यह सामर्थ्य नहीं थी । अतः मुगल शासक ने ई.स.१७५२ के अप्रैल महीने में मराठों के साथ समझौता किया । इस समझौते के अनुसार मराठों ने रुहेले, जाट, राजपूत, अफगान आदि शत्रुओं से मुगल सत्ता की रक्षा करना स्वीकार किया। उसके बदले में मराठों को नकद राशि मिलनेवाली थी । इसके अतिरिक्त उन्हें पंजाब, मुलतान, राजपूताना, सिंध और रुहेलखंड से चौथ वसूल करने के अधिकार प्राप्त हुए । साथ ही अजमेर और आगरा प्रांतों की सूबेदारी दी गई ।

इस समझौते के अनुसार छत्रपति की ओर से पेशवा ने शिंदे-होळकर की सेनाओं को दिल्ली की रक्षा करने हेतु रवाना किया । मराठे दिल्ली की ओर निकल चुके हैं; यह समाचार प्राप्त होते ही अब्दाली अपने देश को लौट गया । मराठे पड़ाव-दर-पड़ाव पार करते हुए दिल्ली पहुँचे । मराठों के कारण ही अब्दाली का संकट टला; यह मानकर मुगल शासक ने उन्हें मुगल सूबों की चौथ वसूलने का अधिकार दे दिया । इन सूबों में काबुल, कंधार और पेशावर का भी समावेश था । ये सूबे पहले मुगल साम्राज्य के हिस्से थे लेकिन अब वे हिस्से अब्दाली के अफगानिस्तान में थे । समझौते के अनुसार ये सूबे अब्दाली से जीतकर पुनः मुगल साम्राज्य से जोड़ना मराठों का कर्तव्य था । इसके उल्टे; कम-से-कम पंजाब तक का प्रदेश अफगान के अधिकार में लाएँ; यह अब्दाली की इच्छा थी । फलतः आज न सही कल; मराठे और अब्दाली के बीच युद्ध होना अटल था ।

पेशवा नानासाहेब

नानासाहेब पेशवा का भाई रघुनाथ राव जयाप्पा शिंदे और मल्हारराव होळकर को साथ लेकर उत्तर भारत में अब्दाली से युद्ध करने के अभियान पर निकला । उत्तर भारत के स्थानीय सत्ताधारियों के दृष्टिकोण से दक्षिण के मराठे उनके प्रतिस्पर्धी थे ।

मराठों के व्यापक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर मराठों की सहायता करने के बजाय वे तटस्थ रहे। दिल्ली दरबार में मराठों का वर्चस्व और हस्तक्षेप उन्हें स्वीकार नहीं था। लेकिन सूरजमल जाट और रानी किशोरी ने पानीपत युद्ध में घायल हुए सैनिकों की सहायता की ।

साथ ही; उत्तर के कुछ कट्टरपंथी मराठों को परधर्मीय के रूप में देखते थे । उन्होंने भी मराठों के इस व्यापक दृष्टिकोण को समझने का प्रयास नहीं किया। इसके विपरीत, मराठों का वर्चस्व कम हो; इसलिए अब्दाली से हिंदुस्तान पर आक्रमण करने का आग्रह किया । वे ऐसी अपेक्षा करते थे कि अब्दाली मराठों को पराजित कर दक्षिण में नर्मदा पार खदेड़ देगा ।

अटक पर मराठों का झंडा लहाराया : नजीब खान रुहेलों का सरदार था । उत्तर भारत में मराठों का प्रभाव उसे असह्य था । नजीब खान के कहने पर अब्दाली ने भारत पर दोबारा आक्रमण किया । भारत पर उसका यह पाँचवाँ आक्रमण था । उसने दिल्ली जीत ली और बड़ी लूटपाट कर वह अफगानिस्तान को लौट गया । रघुनाथराव और मल्हारराव पुनः उत्तर में गए । उन्होंने दिल्ली को अपने अधिकार में कर लिया और अब्दाली के सरदारों को खदेड़कर पंजाब को जीता । अब्दाली के सैनिकों का पीछा करते हुए मराठे ई.स.१७५८ में अटक तक पहुँच गए । अटक में मराठों का झंडा फहरा उठा । अटक यह स्थान वर्तमान पाकिस्तान में है। मराठों ने यह अभियान अटक के आगे पेशावर तक चलाया परंतु मराठे अपने अधिकारवाले प्रदेशों का उत्तम प्रबंध करने में सफल नहीं रहे ।

दत्ताजी का पराक्रम : पंजाब पर अपनी पकड़ मजबूत करने और नजीब खान का दमन करने के लिए पेशवा ने दत्ताजी शिंदे और जनकोजी शिंदे को उत्तर में भेजा । दत्ताजी उत्तर में गया । नजीब खान ने उसे बातचीत में उलझाए रखा और दूसरी ओर अब्दाली से सहायता करने की प्रार्थना की । यह संदेश मिलते ही अब्दाली ने फिर से भारत पर आक्रमण किया । यमुना तट के बुराड़ी घाट पर दत्ताजी और अब्दाली आमने-सामने आ गए । उनके बीच घमासान युद्ध हुआ । दत्ताजी ने असाधारण शौर्य की पराकाष्ठा की परंतु इस युद्ध में दत्ताजी को वीरगति प्राप्त हुई ।

क्या तुम जानते हो ?

दत्ताजी ने बड़े धैर्य और वीरता के साथ युद्ध किया लेकिन अंत में वह युद्ध भूमि पर घायल होकर गिर पड़ा । रुहेला नजीब खान का सलाहकार कुतुबशाह हाथी से उतरकर घायल दत्ताजी के पास आया और दत्ताजी से पूछा, ''क्यों पटेल जी, तुम हमारे साथ और भी लड़ोगे ?'' लहूलुहान दत्ताजी धरती पर पड़ा हुआ था लेकिन कुतुबशाह के इन शब्दों को सुनकर उसने बड़े स्वाभिमान से परिपूर्ण उत्तर दिया, ''हाँ, बचेंगे तो और भी लड़ेंगे ।''

सदाशिवरावभाऊ : नानासाहब ने अब्दाली का दमन करने के लिए अपने चचेरे भाई सदाशिवरावभाऊ और अपने बड़े बेटे विश्वासराव को उत्तर में भेजा। सदाशिवरावभाऊ चिमाजी अप्पा का बेटा था । उसके साथ विशाल सेना और शक्तिशाली तोपखाना था । इब्राहीम खान गारदी तोपखाने का प्रमुख था। इसी तोपखाने के बल पर उसने ई.स.१७६० में लातूर जिले के उदगीर की लड़ाई में निजाम को पराजित किया था।

सदाशिवरावभाऊ

पानीपत का युद्ध : उत्तर के इस अभियान में सदाशिवरावभाऊ ने दिल्ली जीत ली । इसके बाद

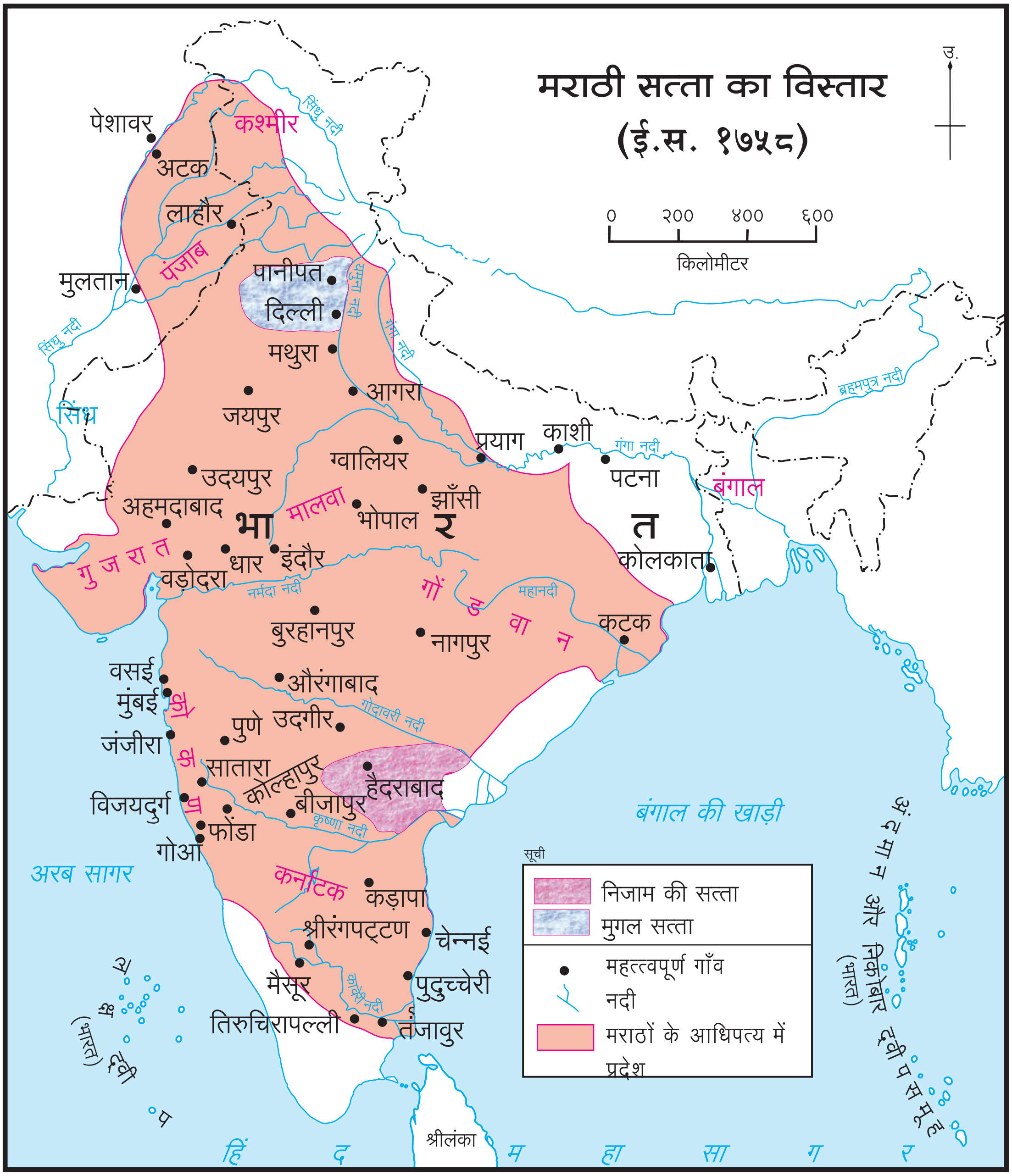

पानीपत में मराठों की सेना और अब्दाली की सेना आमने-सामने आ गई । ई.स.१४ जनवरी १७६१ को मराठों ने अब्दाली पर आक्रमण कर युद्ध को प्रारंभ किया । यह पानीपत का तीसरा युद्ध था । इस युद्ध में गोली लगने से विश्वासराव मारा गया। यह समाचार सदाशिवराभाऊ को प्राप्त होते ही वह क्रोध में पागल होकर शत्रु पर टूट पड़ा । इस घमासान युद्ध में वह दिखाई नहीं दे रहा था । यह देखकर कि हमारा नेता दिखाई नहीं दे रहा है; मराठी सेना का मनोबल गिर गया । उसी समय अब्दाली के आरक्षित और ताजा दम के सैनिकों ने मराठों पर आक्रमण किया । मराठों की पराजय हुई । इस युद्ध में महाराष्ट्र की एक संपूर्ण युवा पीढ़ी समाप्त हो गई । कई वीर-पराक्रमी सरदारों ने वीरगति पाई ।

क्या तुम जानते हो ?

पानीपत के युद्ध में लगभग डेढ़ लाख लोग मारे गए । एक पत्र में किया गया सांकेतिक वर्णन इस प्रकार है :

''दोन मोत्ये गळाली. सत्तावीस मोहोरा हरवल्या ! आणि रूपये, खुर्दा किती गेल्या याची गणतीच नाही.''

मराठों का मत था कि विदेशी अब्दाली को यहाँ शासन करने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है; इस व्यापक उद्देश्य को ध्यान में रखकर मराठों ने अब्दाली से युद्ध किया । हम सभी भारतीय हैं और अब्दाली विदेशी शत्रु है; इस प्रकार का पत्र लिखकर सदाशिवरावभाऊ ने उत्तर के सभी सत्ताधीशों को मराठों की व्यापक और सर्वसमावेशक भूमिका से अवगत कराया था परंतु इस भूमिका को अनुकूल समर्थन उत्तर के सत्ताधीशों ने नहीं दिया और वे तटस्थ रहे। फलस्वरूप भारत की रक्षा का दायित्व अकेले मराठों पर आ गया । अतः यह कहा जा सकता है कि भारत एक देश है और उसका शासक किसी भी धर्म का हो; फिर भी सभी ने उसे समर्थन देना चाहिए; यह बोध इतिहास में सबसे पहले मराठों ने जगाया ।

पेशवा माधवराव : नानासाहब पेशवा की मृत्यु के पश्चात उनका बेटा माधवराव पेशवा पद पर बैठा। माधवराव ने अपने शासनकाल में निजाम और हैदरअली का बंदोबस्त किया । उसने उत्तर में मराठों का प्रभुत्व पुनः स्थापित किया ।

पेशवा माधवराव

पानीपत के युद्ध में मराठों की पराजय हुई थी; यह देखकर निजाम ने मराठों के विरोध में फिर से गतिविधियाँ प्रारंभ की । उसने मराठों के प्रदेश पर आक्रमण किए परंतु माधवराव ने निजाम को पैठण के समीप राक्षस भुवन नामक स्थान पर पराजित किया ।

हैदरअली मैसूर का सुल्तान था । पानीपत के युद्ध में हुई मराठों की हार देखकर उसने कर्नाटक में मराठों के प्रदेश पर हमले किए परंतु मराठों ने उसे श्रीरंगपट्टन के निकट मोती तालाब स्थान पर हुए युद्ध में हराया । तब हैदरअली ने मराठों को तुंगभद्रा नदी के उत्तर की ओर का प्रदेश देना स्वीकार किया ।

ई.स.१७७२ में माधवराव पेशवा की मृत्यु हुई। मराठों के इतिहास में माधवराव का उल्लेख निष्ठावान, परिश्रमी, संकल्पशील और लोकहितजागरूक शासक के रूप में किया जाता है। इस पराक्रमी पेशवा की मृत्यु से मराठी राज्य की बड़ी हानि हुई ।

क्या तुम जानते हो ?

पेशवा माधवराव ने किसानों के हितों की ओर विशेष ध्यान दिया । कुएँ खुदवाकर पुणे की जलापूर्ति में वृद्धि की । उसके कार्यकाल में नाना फड़नवीस जैसा प्रशासक तथा रामशास्त्री प्रभुणे जैसे महान न्यायाधीश हुए । न्याय व्यवस्था में सुधार किए जिससे प्रजा को न्याय मिले । तोपें और गोला-बारूद बनाने के कारखाने खोले । सिक्के ढालने के लिए टकसाल का प्रबंध किया।

पेशवा माधवराव के पश्चात नारायणराव और सवाई माधवराव गद्दी पर बैठे परंतु ये दोनों पेशवा अल्पायु रहे । इसके अलावा उनके शासनकाल में पेशवाई को गृहकलह ने ग्रस लिया । एक समय अटक के पार झंडा फहराने वाला रघुनाथराव सत्ता की लालसा में अंग्रेजों की शरण में चला गया । परिणामतः मराठे और अंग्रेजों के बीच युद्ध हुआ ।

ई.स.१७८२ में हैदरअली की मृत्यु हुई । उसके बाद उसका बेटा टीपू मैसूर का सुल्तान बना । वह निष्णात योद्धा होने के साथ-साथ विद्वान और कवि भी था । अपने पराक्रम से उसने अपने राज्य का प्रभाव बढ़ाया । उसने फ्रांसीसियों से मित्रता स्थापित कर अंग्रेजों के प्रभाव को आघात पहुँचाना प्रारंभ किया । ई.स.१७९९ में अंग्रेजों के विरुद्ध हुए युद्ध में वह मारा गया ।

मराठी सत्ता के प्रभाव की पुन:स्थापना : पानीपत युद्ध में हुई हार के कारण मराठों की उत्तर भारत में स्थापित प्रतिष्ठा पर जबर्दस्त आघात हुआ था । उत्तर में अपनी सत्ता को पुनः स्थापित करने के लिए माधवराव ने महादजी शिंदे, तुकोजी होलकर, रामचंद्र कानडे और विसाजी पंत बिनीवाले सरदारों को उत्तर में भेजा । मराठी सेना ने जाट, रुहेले और राजपूतों को पराजित किया । मुगल शासक शाहआलम को अपने संरक्षण में दिल्ली की गद्दी पर बैठाया । इस प्रकार उत्तर में फिर से मराठों की सत्ता स्थापित हुई ।

पानीपत के युद्ध में मराठों को प्रचंड हानि उठानी पड़ी थी । अब्दाली की सेना को भी क्षति पहुँची थी । पानीपत के युद्ध में विजय प्राप्त होने के बावजूद अब्दाली को बहुत बड़ा आर्थिक लाभ नहीं हुआ था । अतः उसने अथवा उसके उत्तराधिकारियों ने भारत पर फिर से आक्रमण करने का साहस नहीं किया । इसके उल्टे; उनके ध्यान में आ गया था कि उत्तर में निर्माण होने वाली अराजकता पर अंकुश रखने की सामर्थ्य मराठों में ही है । अतः उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि मुगल पातशाही का संरक्षण मराठे ही करें । मराठों के साथ मित्रता स्थापित करने के लिए उसने अपने दूत को भी पुणे भेजा था । पानीपत में हुई इतनी बड़ी पराजय को पचाकर उत्तर की राजनीति में फिर से स्वयं को स्थापित करने में मराठे सफल रहे; यह उल्लेखनीय तथ्य है । इसमें मल्हारराव होलकर, अहिल्याबाई होलकर और महादजी शिंदे का बहुत बड़ा योगदान रहा ।

पेशवा घराने की वंशावली

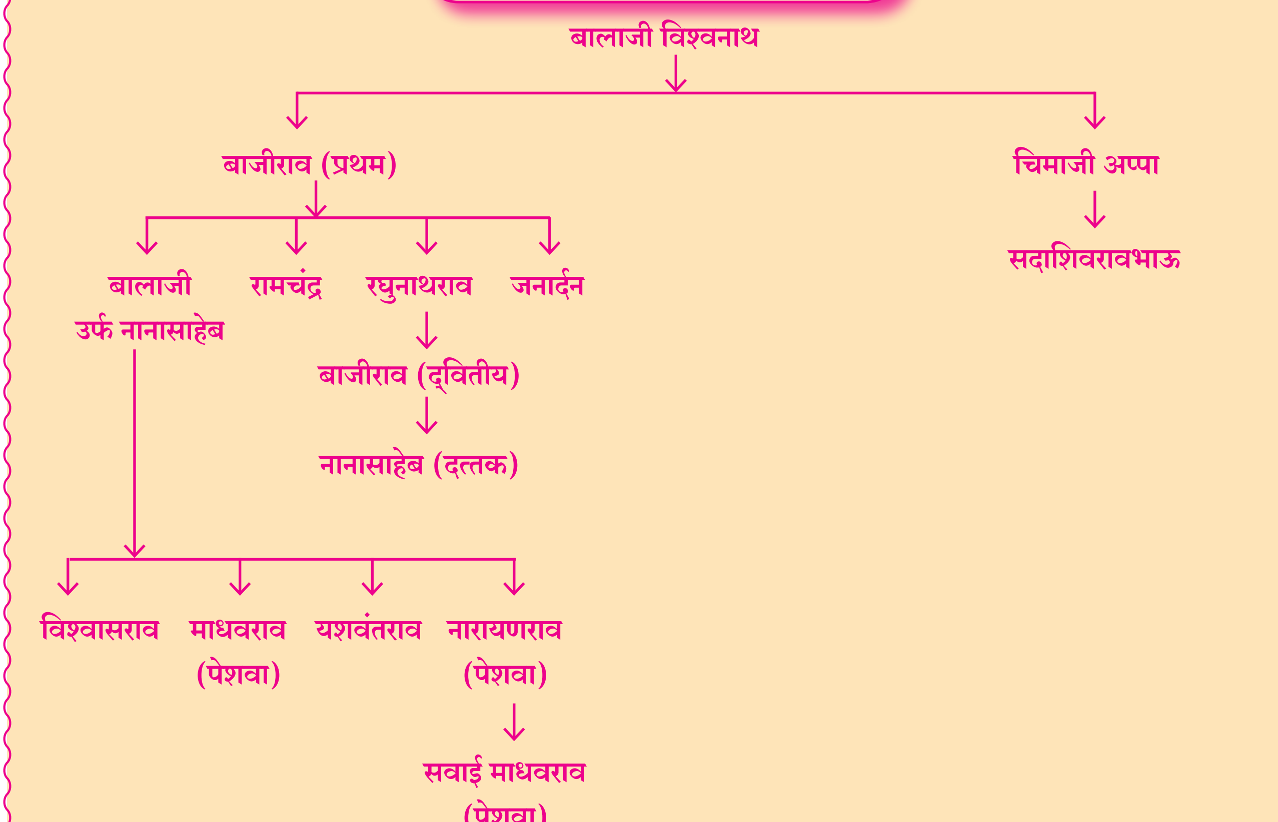

स्वाध्याय

१. **कौन भला ?**

(१) अफगानिस्तान से आए हुए ....
(२) हिमालय की तलहटी में स्थायी रूप में बसे हुए..
(३) नानासाहेब पेशवा का भाई ....
(४) मथुरा के जाटों का प्रमुख ....
(५) पैठण के समीप राक्षस भुवन नामक स्थान पर निजाम को पराजित करने वाला ....

२. **संक्षेप में लिखो :**

(१) अटक पर मराठों का झंडा फहरा उठा ।
(२) अफगानों के साथ संघर्ष ।
(३) पानीपत युद्ध के परिणाम ।

३. **घटनाक्रम लगाओ :**

(१) राक्षस भुवन का युद्ध
(२) टीपू सुल्तान की मृत्यु
(३) माधवराव पेशवा की मृत्यु
(४) पानीपत का युद्ध
(५) बुराड़ी घाट की लड़ाई

४. **निम्न चौखट में पाठ में आए हुए व्यक्तियों के नाम ढूँढ़ो :**

म	स	ह	ना	ज	न	को	जी
हा	ज	द	रा	ना	फ	म	त्ता
द	या	च	य	प	सा	थ	द
जी	प्पा	ल	ण	आ	रू	हे	प्र
बा	ला	जी	वि	श्व	ना	थ	ब
अ	व	ला	मा	ध	व	रा	व
स	दा	शि	व	रा	व	भा	ऊ
म	ल्हा	र	रा	व	क	चि	दे

उपक्रम

इंटरनेट (अंतरजाल) की सहायता से पानीपत युद्ध की जानकारी प्राप्त करो और कक्षा में प्रस्तुत करो ।

सवाई माधवराव पेशवा का दरबार